Prakrit
M. A. Sem. - III

समयसार अनुवाद (A) ~~कुन्दकुन्दाचार्य~~

प्रश्न 1 जीवो चरित्तदंसणणाणठिउ तं हि ससमयं जाण।
पुग्गलकम्मपदेसट्ठियं च तं जाण परसमयं ॥ (2)

अनुवाद :— समय के स्वरूप के सम्बन्ध में विवेचन करते हुए कहा गया है कहा गया है कि निश्चय से चारित्र दर्शन और ज्ञान में स्थित जीव है इसको स्वसंमय जानो और जो पुद्गल कर्म प्रदेशों में स्थित जीव है उसको पर समय जानो।

(2) णवि होदि अप्पमत्तो ण पमत्तो जाणओ दु जो भावो।
एवं भणंति सुद्धं णाओ जो सो उ सो चेव ॥ (6)

अनुवाद :— प्रस्तुत गाथा में शुद्ध आत्मा के स्वरूप का विवेचन करते हुए कहा गया है कि किन्तु जो ज्ञायक भाव है वह अप्रमत्त भी नहीं है और प्रमत्त भी नहीं है इस प्रकार उसे शुद्ध कहते है और जो ज्ञायक है वह तो वही ज्ञाता ही है। —

(3) ववहारणओ भासदि जीवो देहो य हवदि खलु इक्को।
ण दु णिच्छयस्स जीवो देहो य कदापि एकट्ठो ॥ (27)

अनुवाद :— प्रस्तुत गाथा में व्यवहार नय है से शरीर और जीव की एकता के सम्बन्ध में विवेचन किया गया है व्यवहारनय कहता है कि जीव और शरीर एक ही होता है किन्तु निश्चय के अनुसार जीव और शरीर कभी एक वस्तु नहीं है।

एएहि य संबंधो जहेव खीरोदयं मुणेदव्वो।
ण य हुंति तस्स ताणि दु उवओगगुणाधिको जम्हा ॥

अनुवाद :— प्रस्तुत गाथा में वर्णादिक भावों का निश्चयनय के अनुसार जीव के न होने में कारण का वर्णन मिलता है सभी भाव व्यवहार नय के अपेक्षा जीव के है और निश्चयनय के अपेक्षा जीव के नहीं है इनके साथ जीव का सम्बन्ध दूध और पानी की तरह जानना चाहिए। किन्तु वे उसके अर्थात जीव के नहीं होते है क्योंकि जीव उपयोग गुण के कारण अधिक है।

Scanned with CamScanner

17.5.21

92

समयसार से अनुवाद

M. A. Sem. III

① वंदित्तु सव्वसिद्धे धुवमचलमणोवमं गइं पत्ते।
वोच्छामि समयपाहुडमिणमो सुयकेवली भणियं॥ ①

अनुवाद! —— प्रस्तुत गाथा मंगलाचरण में परमात्माओं को प्रणाम किया गया है। स्थिर शाश्वत और अनुपम गति को प्राप्त कर लेने वाले सभी सिद्ध परमात्माओं को प्रणाम करके श्रुतकेवलिओं के द्वारा कहे गये इस समय प्राभृत नामक ग्रन्थ को कहूंगा।

② सुदपरिचिदाणुभूदा सव्वस्स वि कामभोगबंधकहा।
एयत्तस्सुवलंभो णवरि ण सुलहो विहत्तस्स॥ ४

अनुवाद! —— प्रस्तुत गाथा में एकत्व की दुर्लभता का वर्णन किया गया है काम भोग विषयक बन्ध की अनुभव की गई है। किन्तु केवल शरीर आदि पर द्रव्यों से भिन्न आत्मा की एकता की कथा वही सुलभ नहीं है।

③ जह णवि सक्कमणज्जो अणज्जभासं विणा उगाहेउं।
तह ववहारेण विणा परमत्थुवएसणमसक्कं॥ 8

अनुवाद —— प्रस्तुत गाथा में व्यवहार के उपदेश का वर्णित है जिस प्रकार अनार्य या मलेच्छ मनुष्य अनार्य भाषा के बिना ग्रहण करने या समझने में भी समर्थ नहीं होता है, उसी प्रकार व्यवहार के बिना परमार्थ का उपदेश देना समर्थ नहीं है।

(५) ववहारोऽभूयत्थो भूयत्थो देसिदो दु सुद्धणओ।
भूयत्थमस्सिदो खलु सम्माइट्ठी हवइ जीवो॥ (११)

अनुवाद! —— प्रस्तुत गाथा में निश्चयनय की सत्यता का विवेचन किया गया है। व्यवहार नय अभूतार्थ है और शुद्धनय भूतार्थ कहा गया है। निश्चय से भूतार्थ नय का आश्रय लेने वाला जीव सम्यग्दृष्टि होता है।

समाप्त

Scanned with CamScanner